रखता था।

मगध पर असफल आक्रमण → सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त और चाणक्य ने मिलकर मगध पर आक्रमण किया परन्तु नन्दों की शक्ति इतनी अधिक थी कि वे बुरी तरह पराजित हुए और उसे प्राण रक्षा की आशा भी गयी किन्तु दोनों किसी प्रकार प्राण बचाकर भाग निकले। इससे वह निराश नहीं हुए और इधर उधर भटकने लगे। उसी क्रम में उसे एक दिन किसी बुढ़िया के घर पर रात में रुकना पड़ा। बुढ़िया ने एक बच्चे को गर्म रोटी खाने के लिए दी बच्चे ने आतुरतावश रोटी को बीच से ही खाना शुरू कर दिया जिससे उसका मुँह जल गया। बुढ़िया ने लड़के से कहा कि तुम्हारा यह कार्य चन्द्रगुप्त के समान ही है। बच्चे ने पूछा— माँ मैं क्या कर रहा हूँ और चन्द्रगुप्त ने क्या किया था?, माता ने उत्तर दिया बेटा तुम चारों भाग को छोड़कर केवल बीच का भाग खा रहे हो। चन्द्रगुप्त सम्राट बनने का महत्वाकांक्षा रखता था। उसने सीमा प्रान्तों को अधीन किए बिना ही राज्य के मध्य में ग्रामों और नगरों पर आक्रमण कर उसकी सेना को नष्ट कर दिया, ऐसा करना मूर्खता थी। बुढ़िया और बच्चे के वार्तालाप से चन्द्रगुप्त को आध्यात्मिक प्रेरणा मिली। उसे अपनी राजनीतिक भूल का पता चल गया। फलस्वरूप चाणक्य और चन्द्रगुप्त